पाठ 10. सत्साहस

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को साहस के सही अर्थ और महत्व से अवगत कराना है। इस पाठ द्वारा बच्चे समझ पाएँगे कि सही मायने में वही व्यक्ति साहसी होता है जिसे अपने कर्तव्यों का बोध हो और जो नि:स्वार्थ भाव से परोपकार करे।

पाठ का सारांश

प्रत्येक मनुष्य का साहसी होना ज़रूरी है मगर उससे भी ज़रूरी है अपने कर्तव्य का बोध होना। अपने कर्तव्य को समझते हुए साहस दिखाना ही सत्साहस कहलाता है। कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए किया गया साहस निम्न श्रेणी का होता है। मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: शूरवीरों में पाया जाता है। सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए शारीरिक बल नहीं अपितु कर्तव्य-परायणता जैसे गुण का होना आवश्यक है। मारवाड़ के ज़मींदार बुद्धन सिंह स्वदेश छोड़ने के बाद भी अपने देश और राजा की सेवा में उपस्थित हो गए थे। वहाँ के लोग आज भी उनकी बहादुरी के किस्से गाते हैं। सत्साहसी बनने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में पल-पल आया करता है। उसके लिए किसी अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं होती।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। पाठ के महत्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या करें। पाठ में निहित जीवन मूल्यों को बच्चों में विकसित करें तथा बच्चों से पाठ का मूल भाव बताने को कहें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- मनुष्य का सर्वोपरि गुण कौन-सा है?
- तुम्हारी दृष्टि में सच्चे साहसी में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?
- क्या निर्बल पर अपना बल आज़माना साहस की श्रेणी में आएगा!

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।